(5) संस्कृत में मास्टर ऑफ आर्ट्स (एम. ए.) (MASTER OF ARTS IN SANSKRIT.): (एम.ए. हिन्दी की पाठ्य संरचना एवं संक्षिप्त सिलेबस)

उद्देश्य : भारतीय भाषाओं की जननी कही जाने वाली संस्कृत भाषा ज्ञान एवं विज्ञान से परिपूर्ण है । यही कारण है कि देश की गौरवभूता इस भाषा को अनेक विदेशी विद्वानों ने भी श्रद्धापूर्वक अपनाया और इसके अनेक ग्रंथों का विविध विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ । यह एक वैज्ञानिक भाषा है । इसका साहित्य विपुल, विश्वप्रसिद्ध और लोकप्रिय है । वेदों, उपनिषदों, पुराण, रामायण, महाभारत एवं अनेक महाकाव्यों के कारण संस्कृत कई हजार वर्षों से जीवन्त और रसवाहिनी भाषा बनी हुई है ।

भारतीय संस्कृति की आधारभूता इस भाषा को पठन-पाठन के रूप में देश के हर कोने में स्थान मिला है । प्राय: प्रत्येक विश्वविद्यालय में इस भाषा की एम.ए. तक की पढ़ाई की व्यवस्था है । नालन्दा खुला विश्वविद्यालय ने इस परंपरा को सहर्ष स्वीकार कर संस्कृत में मास्टर ऑफ आर्ट्स पाठ्यक्रम चलाने का निर्णय किया है **इस पाठ्यक्रम में नामांकन के लिये न्यूनतम योग्यता स्नातक है**।

पाठ्यक्रम संरचना एवं परीक्षा नियमावली : संस्कृत में एम.ए. पाठ्यक्रम में कुल 16 पत्र होंगे (प्रथम वर्ष में कुल 8 पत्र एवं द्वितीय वर्ष में कुल 8 पत्र)। प्रत्येक पत्र 100 अंकों का होगा और प्रत्येक पत्र की परीक्षा अवधि तीन घंटे की होगी । सभी सैद्धान्तिक पत्रों में 80 अंकों के लिये तीन घंटों की परीक्षा होगी एवं 20 अंकों का सत्रीय कार्य जमा करना होगा ।

परीक्षा नियमों के अनुसार प्रत्येक पत्र में उत्तीर्ण होना आवश्यक है । उसके बाद ही विद्यार्थी को उस वर्ष/पार्ट की परीक्षा में उत्तीर्ण समझा जायेगा और अगले वर्ष/पार्ट में प्रोमोट किया जा सकेगा । इस पाठ्यक्रमों में उत्तीर्णता के लिये सभी पत्रों में कम से कम 33% अंक प्राप्त करना आवश्यक है । उपर्युक्त रूप से निर्धारित प्रतिशत प्राप्तांकों की गणना प्रत्येक पत्र की लिखित परीक्षा तथा सत्रीय कार्य में प्राप्त कुल अंकों को जोड़कर की जायेगी । इसी प्रकार सभी पत्रों में अंकों की गणना की जायेगी, परन्तु यदि किसी पत्र के लिखित परीक्षा अथवा सत्रीय-कार्य में शून्य अंक प्राप्त होता है तब उस पत्र में अनुत्तीर्ण समझा जायेगा । एक भी पत्र में अनुत्तीण होने का अर्थ यह होगा कि वह विद्यार्थी उस पार्ट की परीक्षा में अनुत्तीर्ण समझा जायेगा और उसे फिर से परीक्षा देनी होगी तथा सत्रीय कार्य जमा करना करना होगा । अत: विद्यार्थियों को पूरी सतर्कता से लिखित परीक्षा तथा सत्रीय-कार्य की तैयारी करनी चाहिये जिससे कि दोनों का अंक मिलाकर वे प्रत्येक पत्र में उत्तीर्णता प्राप्त कर सकें और इस प्रकार अगले पार्ट में प्रोमोशन के योग्य हो जायें । पत्रों का विवरण निम्नवत है :

पत्र संख्या	पत्र का नाम	अंकों का वितरण		उत्तीर्ण होने के लिये आवश्यक न्यूनतम अंक (लिखित परीक्षा+सत्रीय कार्य)
		लिखित परीक्षा	सत्रीय कार्य	
	प्रथम वर्ष			
1.	आदिसंस्कृत-साहित्य का इतिहास	80	20	33
2	लौकिक संस्कृत-साहित्य का इतिहास	80	20	33
3	भाषाविज्ञान तथा लिपिविज्ञान	80	20	33
4	भारतीय दर्शन एवं संस्कृत	80	20	33
5	संस्कृतेतर भारतीय भाषाओं के साहित्य का सामान्य परिचय	80	20	33
6	संस्कृत-व्याकरण	80	20	33
7	संस्कृत काव्यशास्त्र	80	20	33
8	संस्कृत-रचना	80	20	33
	कुल	**640**	**160**	**264**

	द्वितीय वर्ष			
9	वेद तथा उपनिषद्	80	20	33
10	प्राचीन संस्कृत-पद्यकाव्य	80	20	33
11	मध्यकालीन तथा आधुनिक संस्कृत-काव्य	80	20	33
12	संस्कृत-गद्यकाव्य	80	20	33
13	संस्कृत-रूपक	80	20	33
14	व्याकरण	80	20	33
15	संस्कृत-शास्त्रों का इतिहास	80	20	33
16	संस्कृत-रचना	80	20	33
	कुल	**640**	**160**	**264**